Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ चांद्रायणव्रतकथाभाषाटीकाप्रारभ्यते ॥

gyanmandir@kobatirth.org
0499808

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीसर्वेश्वरोजयति अथ चांद्रायणव्रतकथाभाषाटीकाप्रारंभः॥ ॥एकसमय राजा युधिष्ठिर जिज्ञासु॰
होके श्रीकृष्ण भगवानकों प्रश्न पूंछताभया हे भगवन् देवनकेंदेव चतुर्दश लोकके ईश्वर जगतके प्रभु
सब लोकके हितकी कामना करकें अर्थात् जिसमें सबनका हित होय ऐसा एक कोईभी व्रत मेरेकों कहो

श्रीगणेशायनमः युधिष्ठिरउवाच भगवन्देवदेवेश लोकनाथजगत्प्रभो॥
व्रतंकिंचिद्वदास्माकंलोकानांहितकाम्यया १ यंकृत्वामानवोभक्त्यासर्वपापैः
प्रमुच्यते॥ श्रीकृष्णउवाच व्रतंचांद्रायणंराजन्सर्वसिद्धिप्रदायकं २ यथा
विष्णुर्हिदेवानांद्विपदांब्राह्मणोयथा॥ नगानांचयथामेरुःगौर्वरिष्टाचतुष्प
दाम् ३

जिस व्रतकों मनुष्य भक्ति पूर्वक करके सब मन वचन कायाके पापसें छूटजाय ऐसा
व्रत मेरेकों कहो॥१॥ तब श्रीकृष्ण कहतेभये कि हे राजन् युधिष्ठिर सर्व प्रकारकी सिद्धिका देनेवाला ऐसा १
व्रतोंमें उत्तम एक चांद्रायण नाम व्रतहै॥२॥ जैसे देवनमें विष्णु उत्तमहै और द्विपद जातीमें ब्राह्मण उत्तम

For Private and Personal Use Only

है और पर्वतोंमें मेरुपर्वत उत्तमहै और चतुष्पद जीवोंमें गौ उत्तमहै ॥ ३ ॥ और धातूमें कांचन उत्तमहै तै
से व्रतोंमें चांद्रायण व्रत उत्तमहै अब इस चांद्रायण व्रतका फल कहतेहैं किसीनें ब्रह्महत्या करी होय
किसीने स्वर्णकी चोरी करीहोय किसीनै मदिरापान पिया होय किसीनें गुरुकी स्त्रीसें गमन किया हो

धातूनांकांचनंचैव व्रतंचांद्रायणंतथा ॥ ब्रह्महाहेमहारीचस्करापोगुरुतल्पगः
४ व्रतात्संजायते मुक्तिर्व्यासस्य वचनंयथा ॥ अत्राप्युदाहरंतीममितिहासंपुरा-
तनम् ५ विश्वरूपतपोदृष्ट्वाशक्रेणसुविचारितं ॥ एषगृएहातिमेलोकंतपोबल
विशेषतः ६ मेनकांचसमाहूयवाक्यंचेदमुवाचह ॥ गच्छसुभ्रुतपस्थानंविश्वरूपः
तपस्यति ७

य ॥ ४ ॥ तथापि इस चांद्रायण व्रतके करनेसें पापोंसें छूटना होजाय ऐसा वेदव्यास
जीका वचनहै इसपर एक प्राचीन इतिहास कहताहूं ॥ ५ ॥ एकसमे विश्वरूप तपस्या कर्ता तिनकों देखके इं
द्रनें विचार कियाकि यह विश्वरूप तप करके मेरे इंद्रलोककों ग्रहण करेगा ॥ ६ ॥ तोमै इसीकों विघ्न करूं ऐ

चां·व्र· सा विचारके मेनका अप्सराकों बोलायके ये वचन बोलाकि हे सुंदरजुहारांकी धरनेवाली तूंजा जहां विश्व कथा·

२ रूप तपस्या कर्ताहै ॥ ७ ॥ तिसकों मोहित करके तपस्यासें चलायदे ऐसा वचन सुनके मेनका अप्सरा जहां मुनि तपस्या कर्ताहै वहां गई ॥ ८ ॥ फिर वसंत ऋतुकों और कामदेवकों साथ लेके वनमेंगई वहां मुनीके पार्श्वे आ

तंप्रलोभययत्नेनतपसोपिनिवर्तय ॥ सागाच्चवनेयत्रसमुनिःप्रतपस्यति ८ सा वसंतंचकामंचगृहीत्वावनमाययौ ॥ तत्रागत्यमुनेःपार्श्वेरम्यंनृत्यंचकारसा ९ हावभा वंततःकृत्वाभ्रुवोक्षेपमथाकरोत् ॥ तथापितन्मनोनैवचकंपेहितपस्विनः १० तांदृष्ट्वाहि महातेजानपोबलसमन्वितः ॥ चकारपरमंयत्नंनातिकंपितवांस्तदा ११ समागत्यस्वयंश क्रोनिजैश्वर्यभयान्वितः ॥ विमृश्यचमहाराजत्यांविचार्यवधंमुनेः १२

यके अच्छे मनोहर नृत्य कों कर्ती भई ॥ ९ ॥ हावभाव करके भ्रुहारांकों चलाया तथापि तपस्वी मुनिका मन भिचला नही ॥ १० ॥ अरु २

तपोबलयुक्त महातेजस्वी मुनि तिन अप्सराकों देखके परम यत्न कर्ता भया परंतु चला नहीं ॥ ११ ॥ तब इंद्र आ

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पके इंद्र लोक जानेके भयसें मुनिकेंपास आयके हे महाराज युधिष्ठिर इंद्रनें मुनिकों मारणेका विचारा १२
केवल स्वार्थ सिद्ध करनेकों तत्पर होताहे वो कार्य अकार्य कभी नही विचारताहे ऐसा प्राचीन आचार्य
कहतेहें ॥१३॥ ऐसा इंद्र तब विचारके अति वेगवान वज्रसें तपस्या कर्नेहुवे मुनिका मस्तक छेदन कर्ता भ

स्वार्थैकसाधनपरोकृत्याकृत्यंकदाचन। नविमृश्यंतिसर्वत्रकथयंतिपुराविदः १३ इत्या
लोच्यतदाशक्रोवज्रेणातीवरंहसा॥ तपोवितन्वतस्तस्यशिरश्चिच्छेदवेगतः १४ तदाखं
डलदेहेतुविश्वरूपवधोद्भवा॥ ब्रह्महत्यामहाघोरालगनिस्मयुधिष्ठिर १५ तयार्दितोहि
मघवाभ्रष्टतेजाबभूवह॥ प्रवृत्तिरेषासर्वत्रजातागजंस्तदामुहुः १६ ख्यातिंजगामलो
केतुदानवेंद्रोमहाबलः॥

या ॥१४॥ तब इंद्रकी देहमें विश्वरूपके वधसें उत्पन्न भई ऐसी महा-
घोर भयानक ब्रह्म हत्या हे युधिष्ठिर लागती भई ॥१५॥ तिस ब्रह्म हत्यासें पीडित हुवा इंद्र तेजसे भ्रष्ट हो
ताभया यह प्रवृत्ति सर्वत्र भई कि बुराकाम करेगा उसीका बुरा होयगा ॥१६॥ तब विश्वकर्माभि पुत्रका वध

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुवा तिनकों स्फुरता भया पीछेक्रोधसें छाउनेत्र करके वेगसें जटाकों उत्पाटन करके ॥१७॥ अग्निके कुंड में प्रक्षेप करनेसें महारौद्रभयानक कृत्या उत्पन्न भई तिन करके वेष्ठित महा असुर हुवा उनकानाम वृत्रा सुर ॥१८॥ ऐसे विख्यात पनेकों महाबली दानवेंद्र प्राप्त हुतो भयो॰ हेराजन् युधिष्ठिर वो दानवदिनदिनप

क्रोधसंरक्तनयनोजटामुत्पाट्यवेगतः १७ अग्निकुंडेनप्रक्षिप्यसाकृत्याख्यमजायत ॥ महाघोरामहारौद्रातयावृत्तोमहासुरः १८ ख्यातिंजगामलोकेनुदानवेंद्रोमहाबलः॥ प्रत्यहंवर्धनेराजन्निशुःविक्षिपमात्रतः १९ महाबलोमहादैत्योबलेनातीवदारुणः॥बि भ्युस्तस्यभयाद्राजन्सर्वेदेवाःसवासवाः २० तदायुद्धमहाघोरंतस्यदेवैर्बभूवह॥ इंद्रोपि॰ युयुधेतेनवीरेणपृथिवीपते २१

ति धनुषमात्र वधनें लगा ॥१९॥ वोमहा बलवान् दैत्य बलकर के अत्यंत भयानक तिनके भय करके इंद्रसहित सबदेवता भयभीत होने भये॥ २०॥ तब देवनके अरु ति न दैत्यके महाभयानक युद्ध होताभया॰ हे पृथ्वीका पति राजा युधिष्ठिर इंद्रभी तिनदैत्यकेसाथ युद्धकर्ताभया २१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तब बडापराक्रमधारी असुर संग्रामके वीचमें ऐरावन हस्तीसहित इंद्रकों मुख करकें आचमन कर्ता भया॥२२॥ तब बृहस्पतिजी कुंभाव्हय नामें अस्त्रकों चलावते भये तिनमहाअस्त्रसें वृत्रासुर वारंवार उबासी खाने लगा॥२३॥ अरु प्रमादकों प्राप्ति होना भया तब इंद्र ऐरावत हस्ती सहित वृत्रासुरके मुखसें निस

तदासुरो महावीर्य ऐरावनसमन्वितं॥ मघवानं महाबुद्धे आचचाम मुखेन वै २२ तदा
कुंभाव्हयं चास्त्रं मुमोचाधिषणो गुरुः॥ तेनासुरो महास्त्रेण जृंभते स्म मुहुर्मुहुः २३ प्रमादः
प्रगमत्तत्र शक्रो निस्तृतवान्मुखात्॥ ऐरावतेन सहितो देवा हर्षमुपाययुः २४ पुनर्बभूव मध
नं तस्य चैवासुरेणतु सप्तर्षीन् वै समाहूय तपोयोगधरास्तदा २५ तदा युद्धे महाघोरे देवताबलसू
दने॥ शक्रवाक्येन संतुष्टा वृत्तमूचुरशंकिताः २६

रता भया तब देवता हर्षित होते भये॥२४
फिर दैत्यके अरु इंद्रके युद्ध होने लगा तिनसमें तप अरु योगकूं धरनेवाले सप्तर्षियोंकूं बोलायके॥२५॥ इंद्र कछु कहता भया तब देवनके बलके नाशकारक ऐसे घोर महा भयानक युद्धमें सप्तर्षि शंकारहित हर्षित होके

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इंद्रके वचनसें वृत्रासुरकों वचन बोलते भये ॥२६॥ मैंतोनिश्चिंत होके स्वर्गका राज करूं ॥२७॥ अरु तुम हे वृत्रासुर यथा योग्य पृथ्वीका राज्य करो तब हे युधिष्ठिर वृत्रासुर ऐसे वचन सुनके ॥२८॥ इंद्रसहित देवतानकों बोलायके ऐसा कहता भयाकि॰हे देवो तुमारेमें कपट अधिकहै इस्मेमे तुम्हारा वचन नही मानताहूं ॥२९॥ जोतुम श॰

अहंस्वर्गस्यराज्यंहिविधास्यामिसमाहितः २७ त्वंचापिपृथिवीराज्यंकुरुवृत्रयथोचितं ॥श्रुत्वावृत्रासुरोराजन्देवताबलार्चितकाः २८ उवाचवचनंदेवान्सविभाष्यमहेश्वरान् ॥नमन्येहंवचोदेवार्यद्व्याजविशेषतः २९ क्रियतेचेद्रतोपृथंशपथंकर्तुमर्हथ ॥ममम्रृत्युर्यदाचैतेनभवेत्कदाचन ३० नरात्रौनदिवाचापिनोर्द्रैर्नैवचनोरसैः॥ नशस्त्रैर्नैवचैवास्त्रैर्नपाषाणैर्नदारुभिः॥ ३१ तदाहंपृथिवीराज्यंकरिष्यामिपुरंदर ॥

पथ करो तो तुम कहो जैसा मैकरूं इतना काम मेरा होनाचाहिये कदापिकाल मेरी मृत्यु नहोय ॥३०॥ रात्रिमें मृत्युनहोय दिनकाभी नहोय आलेसें अरु शुष्कसें मृत्यु नहोय और शस्त्रसें अरु अस्त्रसें मृत्युनहोय फिर पाषाण अरु काष्ठसें मृत्यु नहोय ॥३१॥ तोमैं पृथ्वीका राज्य क॰

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूं हे इंद्र ऐसा वृत्रासुरने कहा तब समयकों जान इंद्र स्वीकार कर्ता भया ॥३२॥ पीछे कोई कालांतरमें इंद्र समुद्रसें उत्पन्नभये ऐसे फेनकुं संध्यासमय देखके उनसें वृत्रासुरका वध विचारता भया ॥३३॥ ऐसे समयकों निज बुद्धिसें विचारके फेन आई नही अरु शुष्कभी नही और संध्या समय रात्रि दिवस नही ऐसे जानके आपके वज्र-

ऊंचकारतदेंद्रोपिसमयप्रतिपालकः ॥३२॥ तदाकालांतरेशक्रोविलोक्यांबुधिसंभवं ॥ फेनं-
संध्यामुखेराजन्वधंवृत्रस्यदारुणं ३३ विचार्यसमयंचापिफेनतत्रसमुज्झित ॥ विज्ञायबुद्धित
स्तस्मिन्निजवज्रसमाक्षिपत् ३४ तेनफेनेनमघवान्निजवज्रयुतेनहि ॥ वृत्रंविच्छेदमहसाच्छि
न्नशीर्षोपतद्भुवि ३५ पुनर्हत्यामहाराजवृत्रासुरवधोद्भवा ॥ इंद्रप्रपीडयामासदारुणातिभयंक
री ३६

कों चलाया ॥३४॥ फेनसहित वज्रसें इंद्र वृत्रासुरकों छेदन कर्ता भया तब वृत्रासुर छिन्न मस्तक होके पृथ्वीपर पडता भया ॥३५॥ तब हे महाराज युधिष्ठिर फिर वृत्रासुरके मारनेसें उत्पन्नभई ऐसी हत्या दारुण अत्यंत भयकारी इंद्रकों पीडित कर्ती भई ॥३६॥ ऐसे हत्याकरके पीडित इंद्र मलिनकांतिभया तब स्वर्गकों-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छोडके भागगया ॥३७॥ पापकर्के पीडितभया ऐसा इंद्र मानस सरोवरमें आया वहां कमलकी नालमें प्रवेश होके बहुत कालतक रहताभया ॥३८॥ तब इंद्ररहित स्वर्गकूं देखके देवता भयभीत हुए अरु सबजन भेले होके सला विचारते भये ॥ ३९ ॥ इंद्र स्वर्गलोकमें नहीतावत् दूसरा कोई राजा करना चाहिये यहां ऐसा देवतानें-

ब्रम्हहत्याक्षयेनार्तःशक्रोभून्मलिनद्युतिः ॥स्वर्गंविहायमघवापलायनपरोभवत् ३७ दह्यमा
नोतिपापेनमानसंशरआगमेत् ॥सरोजनालमाविश्यउवासबहुवासरं ३८ ततोभयान्वितादे
वाः शक्रेणरहितंतदा ॥ नाकेविलोक्यसंभूयचक्रुर्मंत्रसमंत्रिणः ३९ यावदिंद्रंगवेष्यामस्ताव
द्राजाविधीयतां ॥तदाभूमौमहाराजनहुषोराजसत्तमः ४० राज्यंप्रकुरुतेतत्रयाचिष्यामोहि
गम्यतां ॥ तेसर्वेविबुधास्तत्रराजानंनहुषंप्रति ४१ याचयामासुरधिपोभवनाकस्यभूमिप ॥

विचार किया उस वख्त पृथ्वीपर नहुषनामें राजा ॥ ४० ॥ राज्य कर्ताहै उसकों अपणें जाचना करिये चलो त
ब वह सब देव नहुषराजा प्रति ॥ ४१ ॥ याचना कर्तेभयेकि हे भूमिकापति अब तुम स्वर्गका राज्य करो·

 ५

For Private and Personal Use Only

जहां क्षधि पीछा इंद्र न आवे तावत् इंद्र तुम होजावो ॥ ४२॥ तब नहुषराजा तिन देवोंके ऐसे वचन सुन-
के बोलता भयाकि मैंतो नहुषहूं अरु तुम बडे तेजस्वी देवताहो ॥४३॥ मैं तेजरहित स्वर्गका राजा कैसेहो
उंगा सो विचार करो ऐसा नहुष राजाने कहा तब देव नहुषराजाप्रति बोलते भये ॥ ४४॥ हम तेरेकों ते-

यावदिंद्रः समायाति तावदिंद्रो भवस्व भो ४२ इति वाक्यं तदा तेषां श्रुत्वा राजा जगाद ह
॥ अहं हि मानवो नाम यूयं देवा महौजसः ४३ कथं राजा भवामो घहीनतेजा विचार्यतां ॥
इत्युक्तास्तेन नृपतिना देवा ऊचुस्तदा नृपं ४४ वयं तेजः प्रदास्यामो महातेजा भविष्यसि ॥ त-
दा राजापि स्वर्गस्य राज्यं चक्रे समाहितः ४५ इंद्रस्य भुवने किंचित्यद्यदस्ति सुरोत्तमाः ॥ तत्स
र्वं मत्यमादाय दर्शयंतु ममाग्रतः ४६

ज देवेंगे तिनसें तुम महा तेजस्वी होगा तब राजा
अच्छी तरहसें स्वर्गका राज्य कर्ता भया ॥ ४५॥ पीछे राजा देवनकों वचन बोलाकि हे सुरोत्तमो इंद्र भवन
में जोकोई वस्तुहै वो सब मेरे कूं दिखावो ॥ ४६॥ तब देवताओनें इंद्रकी सब समृद्धि दिखाई तिनकों दे-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रवके परम प्रकाशवान नहुष राजा होताभया ॥४७॥ पीछे कोई समय नहुषराजा ऐसा वचन बोलताभ
याकि जो इंद्रासनपर बैठताहै तिनहीकी आ शची स्त्री होतीहै ॥४८॥ इसवास्ते यह इंद्राणी मेरीभी-
स्त्री होणी चाहिये जो इंद्राणी मेरी स्त्री नहोयतो मे स्वर्गका राज्य नही करूंगा ॥४९॥ ऐसा वचन सुनके इं

दर्शयामासकोरिंद्रस्यसमृद्धिंदेवतास्तदा ॥ सर्वतन्नहुषोदृष्ट्वाजहर्ष परमद्युतिः ४७ कदा
चिन्नहुषोराजाजगादवचनंत्विदम् ॥ तिष्ठेदिंद्रासनेयोहिशचीमस्यैवमेदिनी ४८ अतोम·
मापिचेंद्राणिकांताभवितुमर्हति ॥ अन्यथानकरिष्यामिराज्यंस्वर्गस्यकर्हिचित् ४९ इतिवा
क्यंतदाश्रुत्वाशचीभयसमन्विता ॥ गुरोर्जगामशरणंसतीद्रेजारशंकिता ५० गुरुस्तदाताश
रणंयान्वमानांररक्षह ॥ नदाराजाकरगुरुंजगादेषामदीयताम् ५१

द्राणी भयभीत भई
अरु जारभावसें शंकित होके गुरु श्री बृहस्पतिजीकों शरण जाती भई ॥५०॥ तव गुरु शरणे आइ तिनकी र· ६
क्षा कर्तेभये तब राजा नहुष करगुरु कों बोलता भयाकि इस इंद्राणीकों मेरेको देवो ॥५१॥ ७

तब देवोनेभी कह्याकि हे स्नरगुरो इस शचीकों इंद्रकों देवो मैंतो सबदेव हीनबलहीं अरु यह राजा नहुष अति बलवानहै ॥५२॥ ऐसे देवनके वचन वारंवार स्नुनके गुरु वृहस्पति विचार कर्नेभए अरु नहुषराजाको वचन बोलते भएकि ॥५३॥ हे राजन् एकमास विलंबकरो एकमासमेंजो इंद्र नहीआवेगा तो यह इंद्राणी तु

देवैरुक्तंस्नरगुरोशचीसादीयतामिति ॥ वयंहीनबलाः सर्वैराजातिवमहाबलः ५२ मंत्र यामासधिषणोदेववाक्यंपुनः पुनः ॥श्रुत्वाजगादवचनंराजानंनहुषंपति ५३ राजन्विलं- ब्यतांमासमेकंयावत्सुरेश्वरः ॥समायातित्वधपर्याशचीकांताभविष्यति ५४ समयंत्वेन- माकर्ण्यराजाराज्यंचकारसः ॥देवाश्चक्रुस्तदोद्योगंसर्वेशक्रस्यलब्धये ५५ अग्निसमादि शद्देवास्त्वंवेशक्रंगवेषय ॥अग्निर्गवेषयामासनप्राप्तःस्नरसत्तमः ५६

मारी स्त्री होजायगी ॥५४॥ ऐसे समय नियमकों राजा नहुष स्नुनके स्वर्गकाराज्यकर्ता भया अरु सबदेव भेले- होके इंद्रकूं पीछे लानेके अर्थ उद्यम कर्ते भये ॥५५॥ अरु सब देव अग्निके आग्यां कर्ते भयेकि तुम इंद्रकी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गवेषणा करी तब अग्नि इंद्रकूं ढूंढता भया-तथापि इंद्र नमिला ॥ ५६॥ तब देव इंद्रको ढूंढनेके लिये उपश्रु
तिनामें देवताकों आज्ञा कर्ते भए तब वह उपश्रुति इदर उदर चोतरफ इंद्रकी गवेषणा कर्ती भयी ॥ ५७॥
ऐसी परिभ्रमण कर्तीहुईदेवी मानस सरोवरमे कमलपत्रके बीचमे छिपाहुवा ऐसे भ्रमररूपि इंद्र रहता

उपश्रुतिंतदादेवाआदिशन्शक्रलब्धये ॥ इंद्रमन्वेषयामाससोपश्रुतिरितस्ततः ५७ परि
भ्रमंतिसादेविमानसेचसरोवरे ॥ पद्मपत्रांतरेगूढंमूढंभ्रमररूपिणम् ५८ पुरंदरइति-
ज्ञात्वादेवान्हर्षमुपाददौ ॥ बृहस्पतिमुखादेवा रानयामासुराशुतं ५९ ब्रह्महत्यार्दितं-
दीनंपद्मनालनिकेतनम् ॥ बृहस्पतिरुवाचेदंशक्रदेववरत्वया ६० श्रुतंशचीमहीपालो
नहुषोनेतुमिच्छति ॥ इतिवाक्यंतदाश्रुत्वागुरुंप्रतिपुरंदरः ६१

है ॥ ५८॥ तिनकोंय
ह पुरंदर है ऐसाजानके देवनकूं आयके वधामणी दई तब बृहस्पति प्रमुख सब देवता हर्षकों प्राप्त होते भये ७
अरु इंद्रकेपासजाते भये ॥ ५९॥ ब्रह्महत्याकरके पीडित अरु कमल नालमें छिपके बेठाहे ऐसे इंद्रकों बृह-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्पति वचन बोलते भयेकि हे देवनमें श्रेष्ठ इंद्र तुमनें ॥६०॥ सुना नहुषराजा शची इंद्राणीकों लेनेकी इ च्छा कर्ताहैं ऐसा वचन सुनके इंद्र गुरुप्रति ॥६१॥ ऐसा बोलता भयाकि, ब्रह्महत्याके पापयुक्त होने सें मैंतो इंद्राणीकी रक्षा नही कर सकताहूं अरु नहुषराजा स्वर्गलोक का राज्य कर्ताहै ॥६२॥ फिर इं

इत्युवाचमयात्रातुं पापेननहिशक्यते ॥ नहुषश्चेन्महीपालनाकलोकंभुनक्ति सः ६२ शचीग्रहीतुकामोयमुपायोत्रविधीयताम् ॥ अयंचेत्पृथिवीपालो- ब्राह्मणान्वेदपारगान् ६३ दुनोतिनितरांजीवतदाभ्रष्टःस्वयंभवेत् ॥ नचेंद्राणीं नराज्यंवेकर्तुमर्हसिकर्हिचित् ६४ गुरुःप्रसन्नवदनःशचींप्रतियथोदितम् ॥ उवा चशक्रवचनंशचीश्रुत्वातिविस्मिता ६५

द्राणीकूं लेनेकी इच्छा कर्ताहै इसका उपाय करो जोयह नहुष राजा वेदपाठी ब्राह्मणनकों ॥६३॥ बहुतसा दुःख देवेतो स्वयंही राज्यभ्रष्ट होजावे तब इंद्रा णीकूं लेनेकों और राज्य करनेकों योग्य नही ॥६४॥ ऐसा इंद्रनें कहा तब गुरु बृहस्पतिजी प्रसन्न होके

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यह वचन इंद्रके सब इंद्राणीकों सुनादिया तब इंद्राणी यह वचन सुनके अत्यंत आश्चर्य युक्त भई॥ ६५॥ उससमय नहुषराजा इंद्राणीकों वचन बोलता भयाकि मास पूरण होनेलगा अब तुम मेरी स्त्री होजा विलंब नही करना॥ ६६॥ तब इंद्राणी नहुष राजाप्रति ऐसा वचन बोलती भईकि हेराजन् मही

अथांते तु महीपालो शचीं प्रतिजगादह॥ शचीदानीं भवस्त्री त्वं नाविलंबो विधीयताम् ६६ तदेंद्राणी जगादेदं नहुषं महिपं प्रति॥ नाविलंबोत्र राजेंद्र अवशिष्टं दिनत्रयम् ६७ यावद्दिवाकरश्चास्तं नौति तावन्महीपतिः॥ त्वं च ब्राह्मणयानेन धरातोत्रसमोहिचे ६८ अहं ते विक्रममिमं पश्यामि द्विजवाहनात्॥ ॐमित्युक्त्वा महीपालो द्विजान्यानेस्त्वयोजयत् ६९

नेमें दिन ३ शेष रहेहे तो अब विलंब नही करना॥ ६७॥ और सूर्य अस्त नहोय उनके पहिले पहिले ब्राह्मणन कूं पालखीके नीचे जोतके पीछे उसमें तुम बैठके पृथ्वीसें चलके मेरेपास आना॥ ६८॥ मै तुमारा द्विज वाहनसें आनेका पराक्रम देखूंगी ऐसे इंद्राणीके व-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चन राजा स्वीकार करके ॥ ६९ ॥ अगस्त्य प्रमुख सब ब्राह्मण सप्तर्षिंघनकों विष्णुकी मायासें मोहित हो
के पालखी के नीचे जोडनेका हुकुम किया अरु वारंवार कहनें लगा तब सप्तर्षि बोले कि हे राजेंद्र यह काम
ब्राह्मणनकों उचित नहीं पालखीके नीचें वहनेका ॥ ७० ॥ क्युंकि हे राजन् हम सब ब्राह्मण कररहित अ

अगस्त्यप्रमुखान्सर्वान्विष्णुमायाविमोहितः ॥ पुनःपुनरितिप्रोक्तं द्विजैराजेंद्रनोचि
तम् ७० अकरास्तु वयसर्वेनोदंड्यास्तेविशांपते ॥ अदंड्यान्दंडयन्राजादंड्यांश्चै
वाप्यदंडयन् ७१ अयशोमहदाप्नोतिनरकंचापिगच्छति ॥ इतिवाक्यंतदाकर्ण्यरा
जाचैवविमोहितः ७२ नस्थेयंममदेशेहि द्विजाइतिजगादसः ॥ तथापिसमहीपा-
लोहतबुद्धिःस्मरातुरः ७३

दंड्य हैं इसवास्ते कोई राजा अदंड्यकों दंडदेवै अरु दंड्यकों दंड
न देवै वो ॥ ७१ ॥ मोटे अपयशकों प्राप्ति होय अरु नरक प्रति पडजाता है ऐसे ब्राह्मणनके वचन राजा सुन
के विष्णुमायासें मोहितहुवा थका ॥ ७२ ॥ वचन बोलता भया हे ब्राह्मणो मेरे देशमें नही रहना ऐसा वचन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहा तथापि बुद्धिहीन कामातुर राजा जोरावरीसें ॥७३॥ ब्राह्मणजूते हैं ऐसी पालखीपर बैठके राजा स्वर्ग
लोक कूं आता भया तब मध्यान्हसमें मार्गके बीचमें शीघ्रताके लिये ॥७४॥ नहुषराजा कुंभ योनि महामुनि
अगस्त्यजी प्रते पगके अंगुठे कर स्पर्श करके फिर सर्प सर्प ऐसा वचन बोलता भया ॥७५॥ तब महा तेजस्वी-

द्विजयानंसमारुह्यजगामत्रिदिवंप्रति ॥ तदामध्यान्हसमयेमध्यमार्गेत्वरान्वितः
७४ सर्पसर्पेतिवचनंकुंभयोनिंमहामुनिम् ॥ पादांगुष्ठेननहुषोनोदयामासभू-
मिपः ७५ तदागस्त्योमहातेजासंक्रुद्धस्तमुवाचह ॥ महासर्पोभवत्वंचअकार्य-
करणाद्धृशम् ७६ तदासर्पोभवद्राजानारदेननिवेदितम् ॥ बृहस्पतिस्तदाभुवा
शक्रंप्रतिजगादह ७७

अगस्त्य मुनि कोपायमान होके तिस राजाकों वचन बोलते भये मोटे अ
कार्यके करणेसें हेराजन् तुमही महान सर्प होना ॥७६॥ तब राजा नहुष सर्प होगया येवार्ता नारदजीनें बृह-
स्पतिजीकों कही· बृहस्पति स्तनके इंद्रप्रति कहते भये ॥७७॥ हे देवनमें श्रेष्ठ इंद्र तुम स्वर्गलोक आवो विलंब ९

For Private and Personal Use Only

मत करो तब इंद्र बोला हे गुरो मेरेकों दोय हत्या वारंवार दुःख देतीहै ॥७८॥ इससे मुझे वारे निकलनेको सामर्थ्य नहीं इसका तुम विचार करो तब बृहस्पति जीनें चांद्रायण व्रतका विचारकर ॥७९॥ अरु इंद्रकी २ ब्रह्महत्या मिटानेकेलिये इंद्राणी के पास चांद्रायण व्रत कराया तब इंद्राणी शास्त्रोक्त विधिपूर्वक चांद्रा

आगम्यतांदेवगुरनविलंबोविधीयताम् ॥ मांचहत्याद्वयंजीवदुनोतिचमुहुर्मुहुः ॥
७८ नाहंशक्नोमिनिर्गंतुंत्वयाचैवविमृश्यताम् ॥ तदाबृहस्पतिश्चेत्यव्रतंचांद्राय-
णंशुभम् ७९ इंद्रस्यदुःखनाशायकारयामासतामति ॥ इंद्राणीसाचकारेदंयथाशा
स्त्रंयथोदितं ८० व्रतंचांद्रायणंनामबृहस्पतिमुखाच्छ्रुतं ॥ इषस्यपूर्णिमारभ्यव्रतंचांद्रा
यणंचरेत् ८१ राकायांचैवराकेशोभवेद्धष्टकलात्मकः ॥

यण व्रत कर्ती भई ॥८०॥ अब चांद्रायण व्रत करनेकी रीति लिखतेहै इंद्राणीनें चांद्रायण नामें व्रत बृहस्पतिके मुखसें सुना आसोज शुक्ल पूर्णिमाकों चांद्रायण व्रतका प्रारंभ करना ॥८१॥ राका पूर्णिमाके दिन राकेश चंद्र १६ कलात्मक होताहै इससें उस

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिन व्रत करने वालोंकों १६ ग्रास लेना ॥८२॥ जैसे चंद्रमा दिन २ प्रति एकेक कलासें हीन होताहै तैसे दिन २ प्रति एकेक ग्रास व्रत करने वालेके भी कमती होजाताहै ॥८३॥ हे भारत युधिष्ठिर चांद्रायण व्रतमें हविष्यान्नका कूकडीके अंडप्रमाण ग्रास कहाहै ॥८४॥ पीछे जैसे चंद्रमा वधे तैसे ग्रासकोंभी वधाना और एकादशीकों अरु

तत्तस्यांषोडशग्रासाः ग्राह्यावै व्रतचारिभिः ॥८२॥ यावत्सुधांशुः क्षीयेत प्रत्यहं कलयैकया ग्रासोपिप्रत्यहंतावद्धीयतेव्रतचारिभिः ८३ कुक्कुटांडप्रमाणोहिग्रासो भवतिभारत ॥ व्रतेचांद्रायणेग्रासोहविष्यान्नविनिर्मितः ८४ यावत्सुधांशुवर्द्धेत तावद्ग्रासोपिवर्धते ॥ एकादश्यांव्रतंकुर्यादमायामपिचव्रतं ८५ तेग्रासास्तद्दिनेदेयागोमुखेभरतर्षभ ॥ एवंक्रमेणराजेंद्र व्रतंचांद्रायणंचरेत् ८६ कृष्णेग्रासाः प्रदीयंतेप्रवर्धंतेतथासिते ॥ इंदोः कलानुसारेण ह्रासवृद्धिःप्रणोदिताः ८७

अमावास्याकों व्रत उपवास करना ॥८५॥ तब उसदिन केग्रास हे युधिष्ठिर गायके मुखमें देना इसरीतिसें हे राजेंद्र चांद्रायण व्रत करना ॥८६॥ कृष्ण पक्षमें ग्रास हीन होताहै अरु शुक्ल पक्षमें

For Private and Personal Use Only

ग्रास वृद्धि होनाहै चंद्रमाकी कलाके अनुसार कवलकी ह्रास अरु वृद्धि कही ॥८७॥ ऐसे हे राजेंद्र युधिष्ठिर इंद्रा
एणी इंद्रकी प्राप्तिके लिये अरु इंद्रकी २ ब्रह्महत्या मिटानेकेलिये चांद्रायण व्रत कर्त्ती भई ॥८८॥ तब तिन शचीके
व्रत करने करके इंद्रराज्यकूं प्राप्त होता भया ऐसे इस चांद्रायण व्रतके प्रतापसें स्वर्गके राज्यकुं पायके हर्षित हो

एवंप्रकारराजेंद्रशचीशक्रस्यलब्धये ॥ व्रतंचांद्रायणंनाम ब्रह्महत्यानिवृत्तये ८८ तेनव्रतेनश
च्यास्तुलेभेराज्यंपुरंदरः ॥ पुरंदरोपितेनैवलब्ध्वाराज्यंमुमोदसः ८९ हत्याद्वयविनिर्मुक्तः शचीस
हसुरालये ॥ बुभुजेदेवलोकंतुयथोदितविधानतः ९० आरंभेकलशस्थाप्यःसुवर्णफलसंयुतः ॥
चंद्रस्यपूजनंकुर्यात्कलशेप्रत्यहंसुधीः ९१ अखंडदीपदानंस्यान्मासमेकंघृतेनतु ॥ कथाचश्रृ
णुयाद्भक्त्याजनःशुचिर्भूत्वासमाहितः ९२

ताभया ॥८९॥ अरु २ हत्यासें रहित होके इंद्राणी सहित स्व-
र्गमें जायके यथायोग्य प्रीति पूर्वक देवलोकके सुखकों भोगवताभया ॥९०॥ अथ चांद्रायण व्रत पूजा उद्यापन-
विधिः व्रतके आरंभमें कलश स्थापन कर्ना सुवर्ण अरु फलसंयुक्त और व्रत कर्नेवाला कलशकेऊपर दिन २ प्रति

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चंद्रमाकी पूजन करै ॥ २१ ॥ फिर अखंड घृतका दीपक करे मास पर्यंत और पवित्र होके एकाग्र चित्तसें कथा श्रवण करै ॥ २२ ॥ और उद्यापनमें एक गौ दान देना अरु शय्यादान विशेष करके देना पीछे विधिपूर्वक होम करके फिर ब्राह्मण भोजन करावना ॥ २३ ॥ और सुवर्णकी उमा महेश्वरकी मूर्ति बनायके भक्तितत्पर वेदियेकों देना

उद्यापने च गां दद्यात् शय्यादानं विशेषतः ॥ ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात् होमं कृत्वा विधानतः २३
उमामाहेश्वरं दद्यात् ऋत्विजे भक्तितत्परे ॥ चंद्रस्य मूर्तिरूप्यस्य रोहिणीसहिता तदा २४ लक्ष्मीनारा
यणस्यापि मूर्तिं कांचननिर्मितां ॥ यथाशक्ति विधायाथ पूजयेद्भक्तिमान्नरः २५ संपूजयेद्विधाने
न तद्भ्रे विधिनाचरेत् ॥ मंडलादीनि राजेंद्र वित्तशाठ्यं न कारयेत् २६ एवं या कुरुते नारी नरो वा यत-
मानसः ॥

और रूपेकी रोहिणीसहित चंद्रमाकी मूर्ति बनावना ॥ २४ ॥ और लक्ष्मी नारायणकी मूर्ति यथा शक्ति सुवर्णकी करके भक्ति सहित पूजन करना ॥ २५ ॥ और सात धानका मंडल मांडके उसके ऊपर कुंभस्थापन करके तिनके आगे बैसके विधिपूर्वक पूजादिक करना परंतु वित्तकी शाठ्यता नहीं करना अर्थात् छते द्रव्य थोडा खर्च नहीं करना २६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐसे कोई स्त्री अथवा पुरुष एकाग्र मनसें करै वास्त्री सुखके प्राप्त होतीहै फिर वैधव्यता कभी नहीं आवै ॥ ९७॥
और स्त्रियनकूं परम सौभाग्यका देनेवालाहै फिर पुत्रपौत्रके सुखका देनेवालाहै फिर अश्वमेधादि पुन्यके देनेवालाहै
औरसबव्रतोंके फलकों देनेवालाहै॥ ९८॥ और व्रतकर्नेवाला जिस२कामनाकी इच्छा कर्ताहै वोही कामनानिश्चैसिद्ध

नारीसुखमवाप्नोतिनवैधव्यंप्रजायते ९७ सौभाग्यदंपरंस्त्रीणांपुत्रपौत्रसुखप्रदं ।। अश्वमेधादि
पुण्यंसर्वव्रतफलप्रदं ९८ यंयंसमीहतेकामंतंतंप्राप्नोतिनिश्चितं ।।यइमांशृणुयान्नित्यंकथांपाप
नाशिनी ९९ चांद्रायणस्यराजेंद्रसोक्षयफलमश्नुते ।। वक्ताश्रोताचपापेभ्योमुच्यतेनात्रसंशयः १००
इतिश्रीहेमाद्रौचांद्रायणव्रतकथासंपूर्णम् ॥

होजातीहै और जोकोई पापोंकी नाश कर्नेवाली इसकथाकों
श्रवणकरै।। ९९।।तिनकों हेराजेंद्र चांद्रायण व्रतका अक्षय फलकों प्राप्त होय और कथाका वक्ता और श्रोता सब पापों
सें छूटजातेहै इसमें संदेह नही ।।१००।। इतिश्रीयोद्धपुरीयऋषभदत्तशास्त्रिविरचिताहेमाद्रौचांद्रायणव्रतकथा
भाषाटीकासमाप्तिमगमत् ॥

यह पुस्तक मुंबईमै पं॰श्रीधरशिवलालजीके ज्ञानसागरछा॰छा॰ सं॰१९४८ मार्गशीर्षशु॰५

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इतिचांद्रायणव्रतकथासमाप्तः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

4220

For Private and Personal Use Only